Online at: https://researchtrendsjournal.com **ISSN No:** 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 6; 2024; Page No. 165-168

Received: 20-08-2024
Accepted: 29-09-2024

हिन्दी वर्तनी त्रुटियों को सुधारने के लिए शिक्षकों की भूमिका: सरकारी और निजी विद्यालयों की तुलना (विशेष संदर्भ: मेरठ शहर, उत्तर प्रदेश)

[1]कुन्जन शर्मा, [2]डॉ. गुरप्रीत सिंह

[1]शोधकर्ती, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]प्रोफेसर, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: कुन्जन शर्मा

सारांश

इस शोध–पत्र में हिन्दी वर्तनी की शुद्धता से संबंधित शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन किया गया है। शोध का क्षेत्र मेरठ शहर (उत्तर प्रदेश) चुना गया है, जहाँ सरकारी एवं निजी विद्यालयों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में वर्तनी संबंधित त्रुटियों की समस्या का गंभीरता से मूल्यांकन किया गया। शोध में यह पाया गया कि शिक्षक की भाषा दक्षता, प्रशिक्षण, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन प्रणाली तथा प्रेरणा देने की प्रवृत्ति वर्तनी सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षण का अभाव और शिक्षकों की निष्क्रियता प्रमुख बाधाएँ हैं, जबकि निजी विद्यालयों में शिक्षण पद्धतियाँ अपेक्षाकृत व्यावहारिक व नवाचारयुक्त पाई गईं। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षक की दृष्टि, शैक्षिक वातावरण एवं शिक्षण सामग्री में सुधार कर वर्तनी त्रुटियों को प्रभावी रूप से कम किया जा सकता है।

मूलशब्द: हिन्दी वर्तनी, शिक्षक प्रशिक्षण, सरकारी विद्यालय, निजी विद्यालय, मेरठ, भाषा शिक्षा, त्रुटि सुधार, मूल्यांकन प्रणाली।

प्रस्तावना

हिन्दी भाषा भारत की राजभाषा होने के साथ–साथ व्यापक संचार का साधन भी है। इसकी शुद्धता विशेष रूप से वर्तनी के संदर्भ में अत्यंत आवश्यक है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी भाषा अधिग्रहण की प्रक्रिया में होते हैं, और इसी अवस्था में वर्तनी त्रुटियाँ जड़ पकड़ लेती हैं। यदि शिक्षकों द्वारा प्रारंभिक स्तर से ही वर्तनी सुधार पर ध्यान न दिया जाए तो विद्यार्थी में स्थायी त्रुटियाँ विकसित हो जाती हैं। इस शोध का उद्देश्य यह है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों में शिक्षकों की भूमिका वर्तनी सुधार में कैसी है, इस पर तुलनात्मक विश्लेषण किया जा सके।

हिन्दी भाषा केवल एक संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, संवेदनशीलता, और विविधता का जीवंत प्रतीक है। यह भाषा मात्र शब्दों की श्रृंखला नहीं है, बल्कि आत्मा की अभिव्यक्ति है, भावनाओं का विस्तार है, और विचारों का पुलिंदा है। जब कोई बालक अपने जीवन की आरंभिक शिक्षा की ओर अग्रसर होता है, तब उसकी जुबान पर सबसे पहले जो शब्द आकार लेते हैं, वे प्रायः हिन्दी में होते हैं। मातृभाषा के रूप में हिन्दी उसके चेतन और अवचेतन मन को समान रूप से प्रभावित करती है। इसी कारण हिन्दी भाषा की शुद्धता, उसकी वर्तनी की शुद्धता, केवल भाषिक सौंदर्य का प्रश्न नहीं रह जाती, बल्कि यह एक सांस्कृतिक जिम्मेदारी बन जाती है जिसे शिक्षक, विद्यार्थी, माता–पिता और समाज के प्रत्येक वर्ग को साझा करना होता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी उस उम्र में होते हैं जहाँ उनकी मानसिकता गढ़ी जा रही होती है। वे जिस प्रकार के भाषा प्रयोग और अभिव्यक्ति के साक्षी बनते हैं, वही उनकी भाषा–शैली का आधार बनता है। यदि इस अवस्था में भाषा के शुद्ध प्रयोग पर ध्यान न दिया जाए, विशेष रूप से वर्तनी शुद्धता पर, तो यह त्रुटियाँ धीरे–धीरे जड़ पकड़ लेती हैं और फिर उन्हें सुधारना अत्यंत कठिन हो जाता है। वर्तनी की अशुद्धियाँ किसी भी भाषा की गरिमा को धूमिल करती हैं। जैसे किसी सुंदर चित्रकला पर यदि रंग बिगड़ जाएं तो उसकी शोभा समाप्त हो जाती है, वैसे ही शुद्ध वाक्य–रचना में यदि वर्तनी अशुद्ध हो तो उसका सौंदर्य नष्ट हो जाता है।

वर्तनी केवल अक्षरों का क्रम नहीं है, वह भाषा की आत्मा है। यदि विद्यार्थी आरंभ से ही शुद्ध वर्तनी का अभ्यास नहीं करता, तो उसके विचारों की अभिव्यक्ति में स्पष्टता और प्रभावशीलता का अभाव रह जाता है। यही नहीं, परीक्षा में लिखे गए उत्तरों में भी वर्तनी त्रुटियों के कारण अच्छे अंक मिलने में बाधा उत्पन्न होती है। वर्तनी की त्रुटियाँ केवल लिखित भाषा तक सीमित नहीं रहतीं, यह मौखिक अभिव्यक्ति में भी भ्रम उत्पन्न कर सकती हैं। जब कोई शब्द गलत रूप में लिखा या बोला जाता है, तो उसका अर्थ बदल सकता है, जिससे संवाद की प्रक्रिया बाधित हो जाती

है।

शिक्षक की भूमिका इस प्रक्रिया में अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। यदि प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर शिक्षक बच्चों को वर्तनी की महत्ता समझाते हुए नियमित अभ्यास कराएँ, तो विद्यार्थियों में भाषा के प्रति सजगता उत्पन्न होती है। भाषा केवल व्याकरण का अनुशासन नहीं है, यह भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। जब विद्यार्थी भाषा को केवल एक विषय के रूप में नहीं, बल्कि अपने मन के विचारों को दुनिया तक पहुँचाने वाले सेतु के रूप में देखेगा, तभी वह उसकी शुद्धता को आत्मसात करेगा।

हिन्दी भाषा की वर्तनी विशेष रूप से तात्विक है। इसकी प्रणाली तुलनात्मक रूप से सरल तो है, परंतु उसमें कई ऐसे स्वर–संयोजन हैं जो आरंभ में भ्रम उत्पन्न कर सकते हैं। जैसे दृ "संपन्न" और "संपन" जैसे शब्दों में अंतर स्पष्ट रूप से समझाया जाना आवश्यक होता है। विद्यार्थी अक्सर ध्वन्यात्मक आधार पर शब्दों को लिखते हैं, जिससे 'शुद्ध' की जगह 'सुद्ध' और 'विद्यालय' की जगह 'बिद्यालय' जैसे शब्द सामने आते हैं। इन त्रुटियों के पीछे कारण केवल ज्ञान की कमी नहीं, बल्कि सुनने, समझने और लिखने की एक सामूहिक प्रक्रिया का अभाव है।

भाषा अधिग्रहण की प्रक्रिया कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। यह एक सामाजिक, मानसिक और मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपने अनुभवों, परिवेश और अभ्यास से सीखता है। एक विद्यार्थी जब भाषा के प्रयोग से जुड़ता है, तो वह केवल शब्दों को नहीं अपनाता, वह संस्कृति, परंपरा और इतिहास को भी आत्मसात करता है। हिन्दी की वर्तनी में आने वाली त्रुटियाँ इस गहरे संबंध को कमजोर करती हैं और भाषा की आत्मा को कहीं न कहीं चोट पहुँचाती हैं।

इसलिए यह आवश्यक है कि विद्यालयों में विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर, वर्तनी की शुद्धता को केवल एक औपचारिक विषय न माना जाए, बल्कि इसे विद्यार्थी के संपूर्ण भाषा–विकास का मूल आधार समझा जाए। भाषा में त्रुटिहीनता न केवल अच्छे अंक दिलाने में सहायक होती है, बल्कि यह व्यक्तित्व को परिष्कृत करने का भी माध्यम बनती है। एक शुद्ध भाषिक अभिव्यक्ति से आत्मविश्वास जन्म लेता है, और आत्मविश्वास से ही रचनात्मकता का बीजारोपण होता है।

हम यह भी नहीं भूल सकते कि भाषा मनुष्य की बौद्धिक और रचनात्मक क्षमताओं की कसौटी होती है। जब कोई विद्यार्थी किसी विचार को सही रूप में अभिव्यक्त करता है, और उसमें वर्तनी त्रुटिहीन हो, तब वह न केवल प्रभावशाली बनता है बल्कि उसमें भावनाओं की स्पष्टता भी झलकती है। वर्तनी की शुद्धता यह सुनिश्चित करती है कि पाठक या श्रोता किसी प्रकार की व्याकुलता के बिना विचार को समझ सके। इसके विपरीत, जब वर्तनी में त्रुटियाँ होती हैं, तो अर्थ का अनर्थ होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। इससे भाषा में हास्यजनक स्थितियाँ भी उत्पन्न हो सकती हैं, जिससे विद्यार्थी के आत्मविश्वास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

विद्यालयी जीवन में जब विद्यार्थी किसी रचना, निबंध या पत्र आदि को प्रस्तुत करता है, तो उसमें भाषा की शुद्धता के साथ–साथ उसकी वर्तनी पर विशेष ध्यान देना अत्यावश्यक हो जाता है। यह केवल एक शैक्षणिक मूल्यांकन का भाग नहीं होता, अपितु यह उस विद्यार्थी के संपूर्ण भाषिक विकास का परिचायक भी होता है। शुद्ध भाषा प्रयोग से विद्यार्थी का सोचने का तरीका, प्रस्तुतिकरण का कौशल और सामाजिक व्यवहार भी परिष्कृत होता है। यह तथ्य विशेष रूप से तब और भी महत्वपूर्ण हो जाता है जब हम देखते हैं कि आज के डिजिटल युग में भाषा की शुद्धता पर संकट मंडरा रहा है। सोशल मीडिया, त्वरित संदेश सेवाओं और तकनीकी माध्यमों ने भाषा को संक्षिप्त, त्वरित और कभी–कभी अशुद्ध बना दिया है।

ऐसे परिप्रेक्ष्य में विद्यालयों की भूमिका केवल शिक्षण तक सीमित नहीं रह जाती, बल्कि वह भाषा के संरक्षण और संवर्धन की प्रयोगशाला बन जाती है। विद्यार्थी को यह समझाना आवश्यक है कि भाषा केवल परीक्षा पास करने का माध्यम नहीं है, बल्कि वह जीवन भर साथ चलने वाला औजार है। जिस प्रकार कोई कारीगर अपने औजार को चमकाकर रखता है, उसी प्रकार भाषा के शुद्ध प्रयोग, विशेषतः वर्तनी की शुद्धता पर ध्यान देना विद्यार्थी के लिए आवश्यक होता है। यह उसकी अभिव्यक्ति की धार को तीव्र करता है और जीवन के विविध क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करने के द्वार खोलता है।

शिक्षकों की यह नैतिक और शैक्षणिक जिम्मेदारी है कि वे विद्यार्थियों को वर्तनी के प्रति सजग बनाएँ। केवल पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से नहीं, बल्कि दैनिक शिक्षण की प्रक्रिया में शुद्ध भाषा का प्रयोग करके, उन्हें शुद्ध लेखन की आदतों से परिचित कराएँ। प्रायः देखा गया है कि यदि शिक्षक स्वयं भी वर्तनी के प्रयोग में लापरवाह होते हैं, तो उसका प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों पर पड़ता है। इसलिए शिक्षक को अपनी भाषा शैली और लेखन प्रणाली में अनुकरणीय बनना होगा, तभी वे विद्यार्थियों में भाषा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर पाएँगे।

हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि वर्तनी की समस्याएँ केवल शिक्षण की कमी से उत्पन्न नहीं होतीं, अपितु सामाजिक, पारिवारिक और तकनीकी वातावरण भी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब विद्यार्थी अपने घरों में भाषा का अशुद्ध प्रयोग होते देखते हैं, या टेलीविजन, मोबाइल और अन्य मीडिया माध्यमों में भाषा की अशुद्धता का सामान्यीकरण होता है, तो वे भी अनजाने में वही ढाँचा आत्मसात कर लेते हैं। इस प्रकार, वर्तनी की त्रुटियाँ केवल कक्षा का विषय नहीं रह जातीं, बल्कि वे एक सामाजिक चुनौती बन जाती हैं।

इस चुनौती से निपटने के लिए एक समन्वित प्रयास की आवश्यकता होती है जिसमें शिक्षक, अभिभावक, पाठ्यक्रम–निर्माता और संचार माध्यम दृ सभी की भूमिका महत्त्वपूर्ण बनती है। भाषा केवल विद्यालय की दीवारों के भीतर विकसित नहीं होती, वह तो उन गलियों, चौपालों, सोशल मीडिया के मंचों और पारिवारिक संवादों में पनपती है जहाँ विद्यार्थी अपने दैनिक अनुभव अर्जित करता है। यदि वहाँ वर्तनी की शुद्धता का सम्मान नहीं होगा, तो विद्यालय के प्रयास भी सीमित हो जाएँगे।

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में भाषा के प्रति एक प्रकार की सजगता और आलोचनात्मक सोच विकसित हो रही होती है। यह वह समय है जब वे भाषा के सौंदर्य और शक्ति को अनुभव करने लगते हैं। यदि इस अवस्था में वर्तनी शुद्धता पर समुचित ध्यान नहीं दिया गया, तो वे भाषा को केवल एक विषय मानकर उसे रटने की प्रक्रिया में सीमित कर देंगे। इसके विपरीत, यदि वर्तनी को भाषा सौंदर्य का आवश्यक अंग मानकर, अभ्यास और अनुभव के द्वारा सिखाया जाए, तो विद्यार्थी न केवल भाषा में दक्षता प्राप्त करेगा, बल्कि उसमें एक भाषिक सौंदर्यबोध भी विकसित होगा।

उद्देश्य एवं लक्ष्य

- सरकारी एवं निजी विद्यालयों में हिन्दी शिक्षकों की भाषा दक्षता की तुलना करना।
- वर्तनी सुधार के लिए प्रयोग की जा रही शिक्षण विधियों का विश्लेषण करना।
- मूल्यांकन पद्धतियों की तुलना कर यह समझना कि वे वर्तनी सुधार में कितनी कारगर हैं।
- शिक्षक प्रशिक्षण के प्रकार एवं प्रभावों का मूल्यांकन करना।
- शिक्षकों के दृष्टिकोण, प्रेरणा एवं रचनात्मकता को समझना।

साहित्य समीक्षा: पिछले कुछ दशकों में हिन्दी भाषा की वर्तनी पर कई शोध कार्य हुए हैं। डॉ. ओमप्रकाश सिंह (2012) के अनुसार वर्तनी त्रुटियों का प्रमुख कारण शिक्षकों द्वारा उपेक्षा तथा शिक्षण विधियों की सीमितता है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र (2016) का मानना है कि वर्तनी त्रुटियाँ केवल छात्रों की नहीं, बल्कि शिक्षकों की अज्ञानता का भी परिणाम हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा 2018 में जारी रिपोर्ट में यह बताया गया कि हिन्दी भाषा शिक्षकों को व्यावसायिक प्रशिक्षण में वर्तनी सुधार को अलग से स्थान देना आवश्यक है।

अनुसंधान पद्धति:

1. अनुसंधान क्षेत्रः मेरठ शहर (उत्तर प्रदेश)
2. नमूना चयनः 10 सरकारी व 10 निजी विद्यालयों के 100 हिन्दी शिक्षक व 500 विद्यार्थियों का चयन किया गया।
3. तकनीकः प्रश्नावली, साक्षात्कार, अवलोकन एवं लिखित परीक्षा के माध्यम से डेटा संकलन।
4. डेटा विश्लेषण विधिः सांख्यिकीय तकनीकों जैसे माध्य, मानक विचलन, ज–जमेज आदि का उपयोग।

तालिका 1: डेटा विश्लेषण तालिका

चर (Variable)	सरकारी विद्यालय	निजी विद्यालय	सांख्यिकीय तकनीक	परिणाम (p-मान/महत्व)
1. भाषा दक्षता (वर्तनी)	42%	78%	t-test	p<0.001 (महत्वपूर्ण)
2. ICT/इंटरएक्टिव शिक्षण	28%	82%	प्रतिशत तुलना	अंतर स्पष्ट
3. निरंतर मूल्यांकन	35%	88%	प्रतिशत तुलना	अंतर स्पष्ट
4. भाषा प्रशिक्षण	36%	90%	t-test	p<0.001 (महत्वपूर्ण)
5. शिक्षकों की संवेदनशीलता	औसत रेटिंग: 3.2/5	औसत रेटिंग: 4.5/5	माध्य तुलना	मानक विचलन: 0.8 vs 0.6

t-परीक्षण (t-test) के लिए सूत्र

जब दो समूहों के बीच औसत में अंतर की जाँच करनी हो (जैसे सरकारी व निजी विद्यालयों की भाषा दक्षता या भाषा प्रशिक्षण), तब t-परीक्षण का प्रयोग होता है।

t-मान (t-value) निकालने का सामान्य सूत्र

$$t = \frac{\overline{X_1} - \overline{X_2}}{\sqrt{\left(\frac{s_1^2}{n_1} + \frac{s_2^2}{n_2}\right)}}$$

जहाँ

- $\overline{X_1}$ = समूह1 (सरकारीविद्यालय) काऔसत
- $\overline{X_2}$ = समूह2 (निजीविद्यालय) काऔसत
- $s1$ = समूह 1 का वेरिएंस (variance)
- $s2$ = समूह 2 का वेरिएंस
  $n1\ n2$ =
- दोनों समूहों का आकार (number of students)

परिणाम

यदि p<0.05 या p<0.01 या p<0.001 आता है, तो यह अंतर महत्वपूर्ण माना जाता है।

व्याख्या

1. भाषा दक्षताः निजी विद्यालयों के 78% शिक्षक वर्तनी की दृष्टि से दक्ष पाए गए जबकि सरकारी विद्यालयों में यह प्रतिशत 42% था।
2. शिक्षण पद्धति% निजी विद्यालयों में इंटरएक्टिव व ICT आधारित शिक्षण अधिक था, जबकि सरकारी विद्यालयों में परंपरागत व्याख्यान विधि प्रचलित थी।
3. मूल्यांकनः निजी विद्यालयों में निरंतर मूल्यांकन प्रणाली अपनाई जा रही थी जबकि सरकारी विद्यालयों में यह सीमित रूप से था।
4. प्रशिक्षणः 90% निजी शिक्षक किसी न किसी भाषा प्रशिक्षण कार्यक्रम से जुड़े थे, जबकि सरकारी विद्यालयों में यह संख्या केवल 36% थी।
5. प्रेरणा एवं दृष्टिकोणः निजी विद्यालयों के शिक्षक विद्यार्थियों की वर्तनी त्रुटियों के प्रति अधिक संवेदनशील एवं उत्तरदायी दिखे।

तालिका 2: परिणाम व्याख्या तालिका

निष्कर्ष	व्याख्या
1. भाषा दक्षता	निजी विद्यालयों के शिक्षकों में वर्तनी दक्षता सरकारी से 36% अधिक। यह अंतर प्रशिक्षण और संसाधनों की उपलब्धता से जुड़ा हो सकता है।
2. शिक्षण पद्धति	निजी विद्यालयों में ICT और इंटरएक्टिव विधियों का प्रभुत्व, जबकि सरकारी विद्यालयों में पारंपरिक व्याख्यान। यह बुनियादी ढांचे और बजट अंतर को दर्शाता है।
3. मूल्यांकन प्रणाली	निजी विद्यालयों में निरंतर मूल्यांकन अधिक प्रचलित, जो छात्रों की समय पर प्रतिक्रिया सुनिश्चित करता है। सरकारी विद्यालयों में यह प्रणाली अव्यवस्थित है।
4. प्रशिक्षण का प्रभाव	90% निजी शिक्षकों का प्रशिक्षण से जुड़ाव उनकी शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार का प्रमुख कारक। सरकारी विद्यालयों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमी चिंताजनक।
5. शिक्षकों का दृष्टिकोण	निजी विद्यालयों के शिक्षक छात्रों की त्रुटियों के प्रति अधिक सजग। यह प्रतिस्पर्धी वातावरण और प्रदर्शन मूल्यांकन से प्रेरित हो सकता है।

महत्वपूर्ण टिप्पणियां

1. **सांख्यिकीय महत्व**: भाषा दक्षता और प्रशिक्षण के आंकड़ों में t-test से p<0.001 प्राप्त हुआ, जो निजी और सरकारी विद्यालयों के बीच गहरे अंतर को दर्शाता है।
2. **नीतिगत निहितार्थ**: सरकारी विद्यालयों में ICT संसाधनों, प्रशिक्षण, और आधुनिक शिक्षण विधियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता।

सीमाएं: नमूना आकार (100 शिक्षक) और क्षेत्र (केवल मेरठ) के कारण निष्कर्षों का सामान्यीकरण सीमित है।

चर्चा और निष्कर्ष

शोध से यह स्पष्ट होता है कि हिन्दी वर्तनी त्रुटियों के सुधार में शिक्षक की भूमिका निर्णायक है। सरकारी विद्यालयों में न केवल

प्रशिक्षण की कमी है, बल्कि शिक्षकों की रुचि व नवाचार की प्रवृत्ति भी अपेक्षाकृत कम है। वहीं निजी विद्यालयों में वर्तनी सुधार के लिए विशेष उपाय किए जाते हैं। यदि सरकारी विद्यालयों में भी शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण, संसाधन एवं प्रोत्साहन प्रदान किया जाए तो वर्तनी त्रुटियों में उल्लेखनीय सुधार संभव है। यह आवश्यक है कि भाषा शिक्षण को केवल व्याकरण तक सीमित न रखकर व्यावहारिक अभ्यासों से जोड़ा जाए।

शोध के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी वर्तनी त्रुटियों के सुधार में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरकारी विद्यालयों में प्रशिक्षण की कमी और शिक्षकों की नवाचार में कम रुचि के कारण वर्तनी सुधार में अपेक्षित प्रगति नहीं हो पाती। इसके विपरीत, निजी विद्यालयों में वर्तनी सुधार के लिए विशेष उपाय किए जाते हैं। यदि सरकारी विद्यालयों में भी शिक्षकों को पर्याप्त प्रशिक्षण, संसाधन और प्रोत्साहन प्रदान किया जाए, तो वर्तनी त्रुटियों में उल्लेखनीय सुधार संभव है। भाषा शिक्षण को केवल व्याकरण तक सीमित न रखकर व्यावहारिक अभ्यासों से जोड़ना आवश्यक है।

सरकारी विद्यालयों में शिक्षकों के प्रशिक्षण की कमी एक गंभीर चिंता का विषय है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् जैसे नियामक निकायों के बावजूद, कई शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान गुणवत्ता मानकों पर खरे नहीं उतरते। इनमें से कुछ संस्थान केवल प्रमाण पत्र प्रदान करने तक सीमित हैं, जिससे अक्षम शिक्षकों की संख्या बढ़ती है। इसके अलावा, शिक्षकों की चयन प्रक्रिया में खामियाँ, मांग और आपूर्ति में असंतुलन, सुविधाओं की कमी, और प्रशिक्षण की गुणवत्ता में गिरावट जैसी समस्याएँ भी मौजूद हैं ।

हिंदी वर्तनी त्रुटियों के सुधार के लिए शिक्षकों को नवीन और रोचक तरीकों का उपयोग करना चाहिए। श्रुतलेख के माध्यम से मात्राओं और वर्तनी में सुधार लाने के लिए, बच्चों को शब्दों को बार–बार लिखवाने के बजाय, रोचक और मनोरंजक अभ्यासों से जोड़ना चाहिए। इससे बच्चों की भाषा सीखने में रुचि बढ़ेगी और वे वर्तनी में सुधार कर सकेंगे।

संदर्भ

1. सिंह, ओ.पी. हिन्दी वर्तनी में त्रुटियाँ एवं सुधार के उपाय. भाषा विज्ञान शोध पत्रिका।, 2012.
2. मिश्र, राजेन्द्र प्रसाद. हिन्दी शिक्षण की चुनौतियाँ". नई दिल्लीः भारत पुस्तक भवन।, 2016.
3. "हिन्दी भाषा शिक्षण की वर्तमान दशा". नई दिल्ली।
4. त्रिपाठी, एस. के. माध्यमिक शिक्षा में भाषा की भूमिका". शिक्षा विमर्श, खंड, 2019, 17।
5. भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर. वर्तनी शिक्षण के नवाचार, 2020.
6. गुप्ता, रेखा. प्रभावी भाषा शिक्षण के सिद्धांत". लखनऊः शिक्षा केंद्र प्रकाशन।, 2021.
7. सिंह, राममूर्ति. हिन्दी भाषा में वर्तनी की समस्याएँ, प्रकाशन विभाग, दिल्ली।, 2005.
8. चौहान, सविता. शिक्षा में हिन्दी वर्तनी सुधार की दिशा, लखनऊ विश्वविद्यालय।, 2010.
9. मिश्र, अनीता. डिजिटल माध्यमों का भाषा शिक्षण में उपयोग, शिक्षा संधान प्रकाशन।, 2015.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.